कला-शिल्प से सर्वांगीण विकास

अगर आप छात्र को रचनात्मक एवं नवाचारी बनाना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि उसमें पाठ्येत्तर विषयों के प्रति रुचि उत्पन्न की जाये। ऐकेडमिक शिक्षा जहां छात्र को ज्ञान के साथ सर्टिफिकेट और डिग्री होल्डर बनाती है, वहीं उसकी सृजनात्मक अभिरुचि उसे बहुआयामी व्यक्तित्व का धनी बनाती है। छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में अनेक पक्ष शामिल होते हैं, जिनमें से कला और शिल्प भी एक है। समय-समय पर हुए अध्ययनों में भी यह बात सामने आयी है कि कलात्मक गतिविधियों में शामिल छात्र अन्य विषयों में भी तुलनात्मक रूप से अधिक समझ विकसित कर लेते हैं। कलात्मक अभिरुचि जागृत होने और उसमें भागीदारी करने या लीन रहने पर छात्रों का मस्तिष्क तीव्र गति से काम करने लगता है। कला और शिल्प में अभिरुचि रखने वाले छात्र समस्याओं के हल तलाश करने में अधिक कुशाग्र होते हैं, वहीं उनके अंदर विचारों के आदान-प्रदान के साथ उसकी अभिव्यक्ति क्षमता मुखर होती है। अनुशासन, आत्मसम्मान, व्यवस्थापन सहित अनेक गुण उसमें विकसित होते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का समग्र विकास होता है। इसलिए परम आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यालय छात्रों के व्यक्तित्व एवं बौद्धिक विकास के साथ अवलोकनात्मक दक्षताओं में गुणात्मक वृद्धि के लिये नियमित रूप से कलात्मक गतिविधियों को संचालित करें।

नवाचारकों के नाम

1. **श्वेता अग्रवाल,** प्रा.वि. भरूहना, मिर्जापुर
2. **आयुषि शर्मा,** राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, हस्तिनापुर, मेरठ

नवाचार के क्षेत्र

1. पृथक एवं विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिये समावेशी शिक्षा का सृजन।
2. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरुचि के स्तर में सुधार।
3. कक्षा/विद्यालय में सीखने का वातावरण।
4. बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास।

किन विद्यालयों में उपयुक्त है : प्रत्येक विद्यालय में लागू किया जा सकता है।

नवाचार का सार

1. पाठ्य-पुस्तकों पर आधारित ज्ञानार्जन को गतिशील एवं स्थाई बनाने के लिये शिक्षा को प्रयोगात्मक एवं क्रियात्मक बनाया जाना अति-आवश्यक है। इसके लिये कला और शिल्प को पाठ्यक्रम में विधिवत शामिल किया जाये। छात्र जैसे-जैसे समझ की सीढ़ियों पर चढ़ता है, तो उसमें विभिन्न चीजों को जानने की उत्सुकता उत्पन्न होती है। वह अलग-अलग रंग के पक्षियों से लेकर पहाड़, आकाश, अंतरिक्ष जैसे अनेक विषयों के बारे में जिज्ञासु होता है। यहीं उसमें कल्पनाशीलता का भी जन्म होता है। यही कल्पनाशीलता उसे अन्वेषी बनाती है। इसलिए कला और शिल्पकारिता बचपन से ही अंकुरित होने वाले विषय हैं, जिन्हें छात्र 'करके सीखना' चाहता है। यहीं से छात्रों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।
2. ग्रामीण परिवेश में विद्यालय आने वाले छात्रों में नियमितता की कमी है, जिसका कारण उनमें उत्साह का संचार और रुचि जागृत न हो पाना है। अक्सर यह भी देखा गया है कि अपने सामाजिक व आर्थिक स्तर के कारण छात्रों में अवसाद के लक्षण पाये जाते हैं तथा आत्मविश्वास और एकाग्रता की भी कमी होती है। कला और शिल्प का विकास, सभी छात्रों को यह बोध कराता है कि वह भी प्रतिभावान है। सृजनात्मक कार्य आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं और हीन भावना का निराकरण करते हैं।

कार्यान्वयन

सामग्री

1. स्पंज, दांत साफ करने का ब्रश, पुरानी बोतलें, जूते के डिब्बे, चूड़ियां, पुराने अखबार, गीली मिटट्ी, रूई, माचिस की तीली, सब्जियां काटने के कुछ उपकरण, गत्ता आदि।

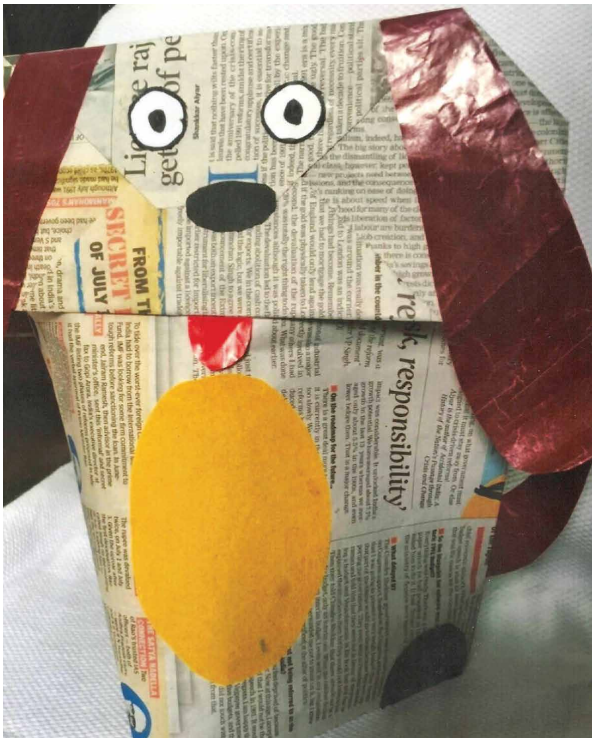

समाचार पत्र से पपेट

कार्यान्वयन की प्रक्रिया

1. सर्वप्रथम कार्य योजना बनायी जाती है। कार्य के विषय में छात्रों से बात करना भी आवश्यक है ताकि उनमें जिज्ञासा उत्पन्न हो और वह कार्य को सफलता पूर्वक और ऊर्जावान रूप से संपन्न कर सकें। कार्य का विभाजन महत्वपूर्ण है, ताकि सभी अपना योगदान सक्रिय रूप से दे सकें।
2. कला और शिल्प के क्रियान्वयन में यह सोचना आवश्यक है कि किस वस्तु का निर्माण करना है। इसके लिये सामग्री

खाली माचिस से अलमारी

लकड़ी की पट्टी से बुक मार्क

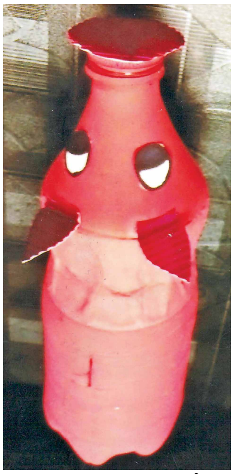

बोतल से पिगी बैंक

भी उसी के अनुसार एकत्र की जानी चाहिए। शिक्षक छात्रों के समक्ष पहले कुछ वस्तुओं के निर्माण की विधि का प्रदर्शन करते हुए यह समझाता है कि कैसे इन्हें सरलतापूर्वक बनाया जा सकता है।

3. छात्रों में इससे आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता का विकास होता है और वह स्वयं प्रयत्नपूर्वक बनाना शुरू कर देते हैं।

कला और शिल्प की समय-सीमा

1. यह बनायी जाने वाली वस्तु पर निर्भर करता है।

उदाहरण

2. विभिन्न छापों के द्वारा कलाकृतियां बनायी जा सकती हैं, जैसे– अंगूठे, उंगलियों, आलू, भिन्डी, स्प्रे आदि।
3. माचिस की खाली डिब्बी और पुराने अखबार के द्वारा विभिन्न वस्तुएं बनाना, जैसे– पेन स्टैण्ड, टोकरी, किताब रखने का स्टैण्ड व पुराने कपड़ों से बैग इत्यादि भी बनाये जा सकते हैं।
4. कक्षा के एक हिस्से को सजाकर रंगमंच का रूप दिया जाता है, जहां छात्र कविता या अपनी रुचि के अनुसार अन्य किसी भी कला का प्रस्तुतिकरण कर सकता है। कक्षा में इस प्रकार से सभी विद्यार्थियों के समक्ष अभिव्यक्ति से छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। छात्र अपने आपको व्यक्त करने में अधिक सक्षम हो जाते हैं।

कार्यान्वन का निष्कर्ष

1. 'करके सीखो' की आदत का विकास होता है तथा सामुदायिक सहभागिता भी बढ़ती है।
2. छात्रों में नैतिकता का विकास होता है और कला के प्रति रुचि बढ़ती है। शिक्षण पद्धति और विद्यालय के प्रति भी छात्र का अधिक झुकाव होता है।

समाचार पत्र से बास्केट

खाली बोतल से पेंसिल बॉक्स

नवाचार के लाभ

शारीरिक विकास : कला और शिल्प के द्वारा छात्रों की कार्यों में भागीदारी के चलते उनके संवेदी अंगों का संतुलन बढ़ता है।

ज्ञानात्मक विकास : छात्र में स्मरण शक्ति के साथ भाषा का विकास व प्रस्तुतिकरण की क्षमता में वृद्धि होती है। छात्र में नियमितता, सोचने-समझने की क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता एवं समस्या समाधान की दक्षता का भी विकास होता है।

सामाजिक विकास : छात्र में आत्मसंतुलन और नैतिकता का विकास होता है तथा आत्मनिर्भरता बढ़ती है। इससे समूह में कार्य करने की क्षमता का भी विकास होता है।

सम्प्रेषण कौशल का विकास : इससे विचारों के आदान-प्रदान तथा सृजनात्मकता को अभिव्यक्त करने के कौशल का विकास होता है।

विशेष : यदि कला और शिल्प का ज्ञान छात्रों तक पहुंचाने मे अध्यापक किसी कारणवश असहज हों तो–

किसी भी विशिष्ट कला में निपुण अभिभावकों को सुविधानुसार समय-समय पर विद्यालय में आमंत्रित कर छात्रों को प्रशिक्षण दिलाया जा सकता है। यह कदम न केवल अभिभावकों को अपने कला के सम्मान की अनुभूति करायेगा बल्कि विद्यालय के लिये भी परोक्ष रूप से कला सिखाने का संसाधन उपलब्ध करायेगा।

छात्र कई प्रकार की कलाएं विद्यालय से सीख सकेंगे तथा अपने माता-पिता को विद्यालय स्तर पर प्रशंसा का पात्र देख प्रसन्न होंगे।

अभिभावकों के माध्यम से छात्रों के जीवन में एक उद्देश्य को प्रारूप दिया जा सकता है। समुदाय के सहयोग से छात्रों को जीवन कौशल भी प्रदान किया जा सकता है। ■